CLASS XII - CBSE

HINDI (SOLUTIONS)

1.(a) युवा पीढ़ी और हमारे संस्कार

औद्योगीकरण के इस युग में बहुत–सी परम्पराएँ टूटी है, उनमें से एक संयुक्त परिवार–व्यवस्था भी है। कार्य–व्यवसाय की मजबूरी युवकों को घर से दूर जाकर अकेले रहने को विवश करती है। परिवार का अर्थ अब माता–पिता और उनके एक दो बच्चों से है। माता–पिता दोनों अपनी व्यावसायिक जिम्मेदारी में व्यस्त और बच्चे स्कूल और उसके बाद घर में अकेले, स्वतन्त्र। पहले दादा–दादी की जो सावधानीपूर्ण दृष्टि उन पर रहती थी, वह अब नहीं हैं। परिणाम साफ है युवा–पीढ़ी को वे संस्कार नहीं मिल रहे जो भारतीय युवाओं में सहज–स्वाभाविक हुआ करते थे।

बच्चे अपने माता–पिता का कहना नहीं मानते। उनके विचार उनको बीते समय की बात लगते है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही वे माता–पिता की उपयोगिता समझते है। वरना तो खाना–पीना, रहना–सहना और सोचना–विचारना सब कुछ उनको दकियानूसी लगता हैं। वयोवृद्ध लोगों का सम्मान करना, उनके सुख–दुःख जानना इत्यादि उनको रूचिकर नहीं लगता। युवा–पीढ़ी अनुशासनहीन है। कॉलेजो में उनके कारण विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न होती है। उनको भड़कीली–खर्चीली जीवन –शैली पंसद है। घर की आर्थिक दशा अच्छी न होने पर कभी कभी वे अपनी इच्छाओं की पूर्ति हेतु सही रास्ते से भटक भी जाते है। युवकों के गुटों में लड़ाई –झगड़ें होने तथा युवतियों से छेड़कानी के समाचार भी खूब आते रहते है।

युवा पीढ़ी के इस आचरण का दोष क्या युवा पीढ़ी को देना उचित हैं? संस्कार के घटने का प्रश्न तो तब पैदा होता हैं जब कोई संस्कार उसे घर–परिवार से मिलता हो या दिया गया हो। युवक जो कुछ सीखते है वह फिल्मों, दूरदर्शन आदि से सीखते है। उनके आदर्श फिल्मों और सीरियलों के हीरो–हीरोइन होती है। धन के लिए अपने आदर्श बेचने वाले राजनेता भी युवकों को पथभ्रष्ट करते है। आज की राजनीति में सीधे–सच्चे और त्यागी पुरूष मिलते ही कहाँ है। नेताओं का आकर्षण उनको येनकेन प्रकारेण सफलता पाने का गुर ही सिखाता हैं आज के धर्मगुरू तथा तथाकथित संत युवकों को संस्कारित करने के नाम पर अंधविश्वासी ही बनाते है। जब सम्पूर्ण सामाजिक वातावरण ही काजल की कोठरी बना हुआ है तो युवकों से उसमें रहकर बेदाग बने रहने की आशा करना कहाँ तक उचित है?

(b) पाँव पसारता आंतकवाद।

पौराणिक कथा है कि भस्मासुर ने अपनी पूजा – तपस्या से भोले बाबा महादेव को प्रसन्न कर लिया। प्रसन्न होकर शिवजी ने उससे वरदान माँगने को कहा तो उसने माँगा – मैं जिसके सिर पर हाथ रख दूँ, वह भस्म हो जाय। वरदान पाकर शक्तिशाली बना भस्मासुर शिवजी को ही भस्म करने के लिए उनके पीछे भागा। शिव आत्मरक्षार्थ ब्रह्या और विष्णु के पास पहुँचें। विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर नृत्य किया और भस्मासुर को अपने साथ नाचने को राजी कर लिया। नृत्य की मुद्रा में अपना हाथ अपने सिर पर रखा। उनका अनुकरण करते हुए भस्मासुर ने जैसे ही अपना हाथ अपने सिर पर रखा वह भस्म हो गया। आंतकवाद आज के युग का भस्मासुर है। उसको शक्तिशाली बनाने वाला अमेरिका ही है। अन्य देशों के राजनेता भी आतंकवादियों को पालते है।

आंतकवाद को पालने वाला अमेरिका स्वंय उसका दंश झेल चुका है। भारत भी आंतवाद से त्रास्त हैं भारत का पडौसी देश नफरत से इस तरह भरा हुआ है कि वह भारत को हर तरह हानि पहुँचाना चाहता हैं। वह युवकों को इस्लाम के नाम पर बहकाकर आंतकी बनाता है। उनकों धन तथा हथियार उपलब्ध कराता है तथा उनको भारत में भेजकर विस्फोट और विनाश कराता हैं मुम्बई में हुए तांडव की ध्वनि अभी भी सुनाई देती हैं यात्रियों से भरे वायुयानों का अपहरण दूसरे देशों को दबाने के लिए होता है। विदेशो से नकली नोट भेजकर हमारी अर्थव्यवस्था को तबाह करने की कोशिशे भी होती है। नकली अस्त्रा–शस्त्रा तथा कोकीन, हेरोइन आदि नशीले पदार्थ भेजकर भारतीय युवाओं को पथभ्रष्ट करना भी आंतकवादियों का काम है।

आंतकवाद धर्म के नाम पर फैलाया जा रहा हैं परन्तु वह धर्म हो ही नहीं सकता। निरीह लोगों को अकारण हत्या धर्म कैसे हो सकता हैं आंतकवाद आज व्यवसाय बन चुका हैं। वह स्मंगलिग के धन्धें से भी जुड़ा है। इसके प्रयोजक राजनेताओं के संरक्षण में काम करते हैं और उनसे खूब धन बटोरते हैं यद्यपि आंतकवाद पाकिस्तान के लिए संकट का कारण बन चुका है। परन्तु उसकी आँखें अब भी नहीं खुली है।

(c) इन्सान का मजहब–धार्मिक भेदभाव

ईश्वर ने तो आदमी बनाया था परन्तु आदमी ने उसे हिन्दू, मुसलमान, ईसाइ, सिख और न जाने क्या –क्या बना दिया। कहते है धर्म जोड़ता है परन्तु प्रत्यक्ष अनुभव तो इसके विपरीत है। धर्म ने मनुष्य को बाँटा है। उसमें अनेक जातियाँ पैदा की है। हिन्दू धर्म को ही ले उसमें सवर्ण–असवर्ण अनेक जातियाँ। कुछ को अपने ऊँचें कुल में जन्म लेने का घमण्ड है और कुछ अकारण छोटी जाति में पैदा होने की पीडा झेल रहे है। मै हिन्दू हूँ। तू मुसलमान है – दोनों इसी बात पर झगड़ रहे है। हिन्दू अयोध्या में ''ढाचें'' को गिराने में गर्व अनुभव करता हैं तो मुसलमान आहत होता हैं। सैकड़ों सालों से भी यह झगड़ा सुलझा नहीं है। बहुत खून–खराबा भी हो चुका है। धर्म के नाम पर स्वयं को औरों से श्रेष्ठ मानने वालों से कबीर ने सीधे शब्दो में पूछा था – जो तु तुरक तुरकिनी जाया। आन मार्ग तें क्यों नहीं आया।

धर्म और जाति की विषधारी कट्टरता ने भारत की एकता को भीषण क्षति पहुँचाई है। धार्मिक आधार अलग होने की भावना ने ही देश के विभाजन का रास्ता तैयार किया था। जाति के आधार पर मनुष्य में भेंद हमें आगे बढ़ने से रोकता है। किसी जाति में पैदा होने से कोई क्यों छोटा हो जाता है और कोई क्यों बड़ा– इसका कोई तर्कसंगत वैज्ञानिक आधार नहीं है। अनेक महान् पुरूषों ने मानव–मानव की एकता का संदेश दिया है। परन्तु वह लोगों के दिलों की दूरी को समाप्त नहीं कर सका है।

भारत ही नहीं समस्त संसार की समस्याओं का कारण मानवता का यह धर्म और जाति में विभाजन हैं मनुष्य तो एक ही है – यदि हम इस सत्य को स्वीकार कर लें तो हमारी अनेक समस्याएँ आसानी से हल हो सकती है। साहिर लुधियानवी को ये पंक्तियाँ हमें धर्म – जाति की दीवारों से बाहर आकर इंसान बनने का संदेश देती है। 'तू हिन्दू बनेगा न मूसलमान बनेगा, इंसान की औलाद है इंसान बनेगा।'

(d) ''फास्ट फूड '' या ''जंक फूड''

भोजन का स्वास्थ्य के साथ गहरा सम्बन्ध है। प्राचीन काल में लोग सोच समझकर प्राकृतिक और स्वास्थ्यप्रद आहार लेते थे। आज का युग भाग दौड़ का है। किसी को फुर्सत ही नहीं है। खाना बनाये और अपने स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त भोजन ही खाये। जीवन की भागमभाग में आदमी मुँह अंधेरे से देर रात तब फँसा है। बस, बीच में थोड़ा सा समय मिलता हैं तो वह अपने पेट को जो कुछ मिल जाता हैं उससे ही भर लेना चाहता है।

लोगों की इस विवशता ने खाद्य पदार्थों का एक बाजार ही पैदा कर दिया हैं बर्गर, पैटीज, हाट डाग, नूडल्स, सेंडविच, पोटैटों– चिप्स, कुरकुरें आदि न जाने कितने खाद्य पदार्थ बाजार में सजे रहते है। ये मँहगे तो होते ही है स्वास्थ्य के लिए लाभदायक नहीं होते है। डिब्बा बन्द इन खाद्य पदार्थो को ही जंक फूड कहा जाता है। ये सदैव तैयारी की दशा में मिलते हैं। पकाने का कोई झंझट न होने से ही इनकों फास्ट फूड भी कहा जाता है। इसके साथ तरह तरह के शीतल पेय भी बाजार में मिलते है। कम्पनियाँ आकर्षक विज्ञापनों द्वारा लोगों को इन पदार्थो के प्रति ललचाती हैं। एक विज्ञापन में तो बताया जाता है कि माँ के हाथ के बने परॉठें कोकाकोला के साथ खाने से उनका स्वाद दुगुना बढ़ जाता है।

युवक तो समयाभाव के कारण इन खाद्यो पर निर्भर हैं परन्तु बच्चे तो इनके दीवाने ही है। अब तो ऐसे चॉकलेट बिकते है जो नशीले होते हैं और इन्हें एक बार खा लेने वाला इनका आदी हो जाता हैं। डॉक्टर जंक फूड को अस्वास्थ्यकर मानते है। उनकी चेतावनी लोगों पर प्रभाव ही नहीं डालती। हमारी सरकार भी इनको रोकना चाहती हैं परन्तु आधे अधूरे मन से। वह कम्पनियों से मिलने वाले राजस्व से हाथ नहीं धोना चाहती । सिंगरेट और तम्बाकू के उत्पादों पर मृत्यु की चेतावनी छपवाकर ही वह अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेती है।

2. तार का पता : .....

दूरभाष : .....

फेक्स : .....

ई–मेल : .....

डायमण्ड स्टेशनर्स, तलवण्डी, कोटा

पत्र क्रमांक ..... दिनांकः–.....

प्रतिष्ठा में,

श्रीमान प्रकाशक महोदय,

पंचशील प्रकाशन,

चौडा रास्ता, हरिपुर।

विषय : पुस्तकें क्रय करने हेतु।

मान्यवर,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि हम आपके प्रकाशन द्वारा प्रकाशित निम्नलिखित पुस्तके क्रय चाहते है–

1. आधुनिक गणित–XII वर्मा–शर्मा 50 प्रति
2. सुप्रीम इंग्लिश ग्रामर एंड कम्पोजिशन चटर्जी 25 प्रति
3. सुगम हिन्दी व्याकरण एवं रचना–X रासबिहारी 50 प्रति

उक्त आदेश पत्र के साथ ही अग्रिम राशि के रूप में 2000/– रु. का बैंक ड्राफ्ट संलग्न किया जा रहा है। शेष राशि का भुगतान माल प्राप्त होने के एक माह बाद कर दिया जाएगा। आदेशित पुस्तकें अविलम्ब प्रेषित करें क्योंकि उक्त आदेशित पुस्तकों की यहाँ भारी मांग चल रही है। पुस्तक मूल्यों पर आकर्षक कमीशन प्रदान करें।

भवदीय

क ख ग

अथवा

राजपूत मोहल्ला

शेरगढ।

दिनांक .....

सेवा में,

श्रीमान जिला रसद अधिकारी,

जिला कलेक्टर कार्यालय,

शेरगढ़।

विषय : नया राशन कार्ड जारी करने हेतु।

मान्यवर,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि मैं प्रशासकीय सेवा में कार्यरत कर्मचारी हूँ एवं रतनगढ़ से स्थानान्तरण होकर शेरगढ़ आया हूँ। वर्तमान में मैं वार्ड नं. 20, राजपूत मोहल्ले में किराये के मकान में रह रहा हूँ। शहर में नया हूँ तथा राशन कार्ड की आकस्मिक आवश्यकता पड़ती रहती है, इसलिए इस शहर का नया राशन कार्ड बनवाना चाहता हूँ। यहाँ आने पूर्व मैंने रतनगढ से जारी राशन कार्ड निरस्त करवा दिया है, जिसकी प्रमाणित छाया प्रति संलग्न है।

अतः निवेदन है कि संलग्न सूचना के आधार पर मुझे नया राशन कार्ड जारी कर अनुगृहीत करें।

भवदीय

क ख ग

3.(i) कथ्य, कथानक और पात्रों में विश्वसनीयता और गतिशीलता लाने के लिए संवादों की योजना होती है। चारित्रिक गुणों को रूपायित करने वाले और वातावरण को अंकित करने वाले संवाद ही योग्य माने जाएंगे।

अथवा

कथावस्तु को 'नाटक' ही कहा जाता है अंग्रेजी में इसे 'प्लॉट' की संज्ञा दी जाती है जिसका अर्थ आधार या भूमि है। कथा तो सभी प्रबंध का प्रबंधात्मक रचनाओं की रीढ़ होती है और नाटक भी क्योंकि प्रबंधात्मक रचना है इसलिए कथानक इसका अनिवार्य है।

भारतीय आचार्यों ने नाटक में तीन प्रकार की कथाओं का निर्धारण किया है –

(i) प्रख्यात

(ii) उत्पाद्य

(iii) मिश्र प्रख्यात कथा।

प्रख्यात कथा –

प्रख्यात कथा इतिहास, पुराण से प्राप्त होती है। जब उत्पाद्य कथा कल्पना पराश्रित होती है, मिश्र कथा कहलाती है।

इतिहास और कथा दोनों का योग रहता है।

इन कथा आधारों के बाद नाटक कथा को मुख्य तथा गौण अथवा प्रासंगिक भेदों में बांटा जाता है, इनमें से प्रासंगिक के भी आगे पताका और प्रकरी है। पताका प्रासंगिक कथावस्तु मुख्य कथा के साथ अंत तक चलती है जब प्रकरी बीच में ही समाप्त हो जाती है। इसके अतिरिक्त नाटक की कथा के विकास हेतु कार्य व्यापार की पांच अवस्थाएं प्रारंभ प्रयत्न, परपर्याशा नियताप्ति और कलागम होती है।

इसके अतिरिक्त नाटक में पांच संधियों का प्रयोग भी किया जाता है।

वास्तव में नाटक को अपनी कथावस्तु की योजना में पात्रों और घटनाओं में इस रूप में संगति बैठानी होती है कि पात्र कार्य व्यपार को अच्छे ढंग से अभिव्यक्त कर सके। नाटककार को ऐसे प्रसंग कथा में नहीं रखनी चाहिए जो मंच के संयोग ना हो यदि कुछ प्रसंग बहुत आवश्यक है तो नाटकार को उसकी सूचना कथा में दे देनी चाहिए।

(ii) कहानी की सीमा संक्षिप्त होती है। इसलिए पात्र भी संक्षिप्त होंगे। पात्रों के माध्यम से जीवन के खण्ड चित्रों को उजागर किया जाता है। कभी वर्णनात्मक प्रणाली में कहानीकार चरित्रों का चित्रण करता है, तो कभी पात्रों के व्यवहार, संवाद उन्हें स्वयं व्यक्त करते है। चरित्र चित्रण की कोई भी प्रणाली क्यों न हो, पात्र आवश्यक होते है।

अथवा

नाटक में नाटक का अपने विचारों, भावों आदि का प्रतिपादन पात्रों के माध्यम से ही करना होता है अतः नाटक में पात्रों का विशेष स्थान होता है। प्रमुख पात्र अथवा नायक कला का अधिकारी होता है तथा समाज को उचित दशा तक ले जाने वाला होता है। भारतीय परंपरा के अनुसार वह विनयी, सुंदर, शालीनवान, त्यागी, उच्च कुलीन होना चाहिए। किंतु आज नाटकों में किसान, मजदूर आदि कोई भी पात्र हो सकता है। पात्रों के संदर्भ में नाटककार को केवल उनहीं पात्रों की सृष्टि करनी चाहिए जो घटनाओं को गतिशील बनाने में तथा नाटक के चरित्र पर प्रकाश डालने में सहायक होते है।

4.(i) किसी समाचार पत्र की निति के अनुसार किसी सामयिक घटना पर टिपण्णी करते हुए लेख लिखना सम्पादकीय लेखन कहलाता है। यह लेख प्रतिदिन छपता है। इसका लेखन संपादक मंडल में से कोई एक करता है। वह अपनी निजी राय देने की बजाय समाचार पत्र की नीति को महत्त्व देता है। किसी एक व्यक्ति का निजी मत न होने के कारण सम्पादकीय के नीचे किसी का नाम नहीं लिखा जाता संपादन का सिद्धांत है तथ्यों की शुद्धता, वस्तुपरकता, निष्पक्षता, संतुलन और स्त्रोत की प्रमाणिकता व विविधता।

अथवा

फीचर की प्रस्तुति रोचक होती है जबकि लेख में वैचारिक गंभीरता अधिक होती है। फीचर ह्रदय को स्पर्श करता है जबकि लेख मस्तिष्क को, फीचर का आयाम संकुचित होता है जबकि लेख का आयाम विस्तृत होता है। फीचर लेखक जन सामान्य की रूचि के अनुकूल लिखता है जबकि लेख में लेखक का सूक्ष्म और गहन अध्ययन का प्रभाव होता है।

(ii) अखबार की खबरे स्थाई होती है जबकि रेडियो की खबरे सुनने के बाद प्रभाव खो देती है। अखबार की खबरों में क्रमिकता की आवश्यकता नहीं होती जबकि रेडियो समाचारों को उसी क्रम में सुनना पड़ता है अखबार की खबरों के लिए अक्षर ज्ञान आवश्यक है जबकि रेडियो समाचार के लिए अक्षर ज्ञान आवश्यक नहीं है। अखबार की खबरों में व्याकरण और वर्तनी की शुद्धता आवश्यक है जबकि रेडियो की खबरों में उच्चारण की शुद्धता आवश्यक है, अखबार की खबरों का माध्यम शब्द है रेडियो की खबरों का माध्यम शब्द और आवाज है।

अथवा

रेडियो समाचार के 3 अंग होते है – 1. इंट्रो 2. मुखड़ा 3. समापन

रेडियो समाचार की कापी साफ–सुथरी तथा टाइप की हुई होनी चाहिए। संक्षिप्त अक्षरों का प्रयोग नहीं होना चाहिए। जटिल कठिन भाषा का प्रयोग ना हो। पांच अंकों से अधिक संख्या को शब्दों में लिखा जाना चाहिए।

5.(i) सूर्योदय से पहले आकाश का रंग–शंख जैसा था, उसके बाद आकाश राख से लीपे चौक जैसा हो गया। सुबह की नमी के कारण वह गीला प्रतीत होता है। सूर्य की प्रारंभिक किरणों से आकाश ऐसा लगा मानों काली सिल पर थोडा केसर डालकर उसे धो दिया गया हो काली स्लेट पर लाल खडिया मिट्टी मल दी गई हो। सूर्य उदय के साथ ऐसा लगा जैसे नीले स्वच्छ जल में किसी गोरी युवती का प्रतिबिंब झिलमिला रहा हो।

(ii) तुलसी ने पेट की आग को समुद्र की आग से भी अधिक भंयकर इसलिए कहा है क्योंकि इसके कारण मनुष्य का विवेक नष्ट हो जाता है। भूख के मारे वह धर्म – अधर्म और बेटा बेटी आदि संबंधों को भूलकर पशु हो जाता है।

(iii) खुद का परदा खोलने का आशय है – अपनी कमियों, दोषो को स्वयं ही प्रकट करना। यदि कोई व्यक्ति दूसरे को निंदा करता है, तों वह अपनी कमजोरी ही व्यक्त कर रहा होता है। दूसरे की बुराई करने वाला अपनी बुराइयों पर से परदा डालने का प्रयास करता है।

6.(i) गावँ में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्ठन पहलवान ढोल बजाता रहता था। इसका कारण था। गाँव में निराशा का माहौल। महामारी व सूखे के कारण चारों तरफ मृत्यु का सन्नाटा था। घर के घर खाली हो गए थे। शक्ति की विभीषिका में चारों तरफ सन्नाटा था। वह लोगों में उत्साह पैदा करने के लिए ढोल बजाता था। ढोल की आवाज से निराश लोगों के मन में उमंग जगती थी। उनमें जीवंतता भरती थी। वह लोगों को बताना चाहता था कि अंत तक जोश व उत्साह से लड़ते रहो।

(ii) सफिया को सिख बीबी ने कहा कि वह उसके लिए लाहौरी नमक लेती आए। यह इच्छा सुनते ही सफिया ने निश्चिय कर लिया कि वह अपनी मुँह बोली माँ के लिए नमक जरूर लाएगी। चाहे गैर कानूनी तरीके से ही क्यों न ले जाना पड़े, बाद में उसने यह भी तय किया कि वह प्रेम की इस भेंट को चोरी से नहीं ले जाएगी। वह कस्टम – अधिकारियों को अपनी भावना समझाकर ले जाएगी। इससे पता चलता है कि उसके मन में प्रेम की पवित्रता का विश्वास मौजूद है। जब उसका भाई उसे कहता है कि कस्टम अधिकारी उसे नमक नहीं ले जाने देगे तो वह बडे विश्वास से कहती है –''कुछ मुहब्बत, मुरौवत, आदमीयत, इनसानियत के नहीं होते ? आखिर कस्टम वाले भी इनसान होते है, कोई मशीन तो नहीं होते।''

(iii) जाति–प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे अम्बेडकर के तर्क है कि जाति–प्रथा को श्रम विभाजन के साथ साथ श्रमिक विभाजन भी करती है। सभ्य समाज में श्रम – विभाजन आवश्यक है, परन्तु श्रमिकों के विभिन्न वर्गो में अस्वाभाविक विभाजन किसी अन्य देश में नहीं है। भारत की जति–प्रथा में श्रम विभाजन मनुष्य की रूचि पर आधारित नहीं होता। वह मनुष्य की क्षमता या प्रशिक्षण को दरकिनार कर जन्म पर आधारित पेशा निर्धारित करती है। जाति प्रथा मनुष्य को विपरीत परिस्थितियों में पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती। फलतः भूखे मरने की नौबत आ जाती है।

(iv) लेखक के मत से दासता से अभिप्राय केवल अपनी कानूनी पराधीनता नहीं है। दासता की व्यापक परिभाषा यह है जिसमें किसी को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न देना। इसका सीधा अर्थ उसे दासता में जकड़कर रखना होगा। इसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है।

7.(i) पुरातत्व वेत्ताओं ने किसी जो कुछ पाया उसको अलग रखकर यह भी देखना है कि वहाँ क्या नहीं मिला–वहाँ यन्त्र मिले है, पर हथियार किसी राजा की समाधि या मकबरा नहीं मिला हैं। अतः राजसत्ता थी या नहीं, यह पूरी तरह नहीं कहा जा सकता। पर इतना विशाल नगर जो दो–सौ हेक्टेअर क्षेत्रफल में था, किस प्रकार शासित होता होगा? अतः यह मानना जरूरी है कि वहाँ कोई अनुशासन जरुर था, जिसने नगर–नियोजन, वास्तु–शिल्प, पानी व्यवस्था, स्वच्छता आदि को बनाने रखा था और बड़ी एकरुपता के साथ। यह अनुशासन जल सत्तात्मक नहीं था यह सामाजिक था, जिसमें शक्ति की महत्ता नहीं थी। परस्पर सहयोग की भावना थी। समाज द्वारा निर्मित अनुशासन था और व्यवस्थाये थीं तभी तो सारा नगर सुव्यवस्थित था और साफ–सुथरा भी था।

अथवा

ऐन फ्रैंक की डायरी से हमें उसके जीवन व तत्कालीन परिवेश का परिचय मिलता हैं इसमें ऐतिहासिक द्वितीय विश्वयुद्ध की घटनाओं, नाजियों के अत्याचारों का वर्णन मिलता है। साथ ही ऐन के निजी सुख दुख व भावनात्मक क्षण भी वयक्त हुए है। ऐन के यहूदी परिवारों की अकथनीय यंत्रणाओं व पीडाओं का चित्रण किया है। लंबे अरसे तक गुप्त स्थानों पर छिपे रहना, गोलीबारी का आंतक, भूख, गरीबी, बीमारी, मानसिक तनाव, जानवरों जैसा जीवन, चोरी का भय, नाजियों का आंतक आदि अमानवीय दृश्य मिलते है। साथ ही ऐन का अपने परिवार, विशेषतः माँ और सहयोगियों से मतभेद, डाँट–फटकार, खीझ, निराशा, एंकात का दुःख, दूसरों द्वारा स्वंय पर किए गए आक्षेप, प्रकृति के लिए बेचैन होना, पीटर के साथ संबंध आदि के वर्णन मिलता है। उसके व्यक्तिगत सुख दुख भी इन पृष्ठों में युद्ध की विभीषिका में एकमेक हो गए है। इस प्रकार यह एक ऐतिहासिक दस्तावेज होते हुए भी ऐन के व्यक्तिगत सुख–दुख और भावनात्मक उथल – पुथल को व्यक्त करती है।

(ii) लेखक ने मोहनजोदड़ों में मिले सबसे ऊँचें बौद्धस्तूप को नागर भारत को प्राचीन लैंडस्केप कहा है। यह इतना भव्य और सुघड है कि जब लेखक वहाँ प्रथम बार पँहुचा तो उसको देखता ही रह गया। यह लगभग 25 फीट ऊँचे चबूतरे पर बना हुआ है। यह 1922 ई. में प्रकाश में आया, जब राखालदास बनर्जी वहाँ गये और उसको देखकर वहाँ खुदायी की योजना बनायी। तभी से यह भारत का प्राचीनतम लैडंस्पेक माना जाने लगा।

अथवा

ऐन अपने प्रिय फिल्मी कलाकारों की तस्वीरें रविवार के दिन अलग करती है। उसके शुभचिंतक मिस्टर कुगलर सोमवार के दिन सिनेमा एंड थियेटर पत्रिका ले आते थे। घर के बाकी लोग इसे पैसे की बरबादी मानते थे। उसे यह फायदा होता था कि साल भर बाद भी उसे फिल्मी कलाकारों के नाम सही सही याद थे। उसके पिता के दफ्तर में काम करने वाली जब फिल्म देखने आती तों वह पहले ही फिल्म के बारे में बता देती थी।